मानसकिता ही बगिड गयी है दलि को छू लेने वाली कहानी

ऑफसि से नकिल कर शर्माजी ने स्कूटर स्टार्ट कयिा ही था कि उन्हें याद आया, पत्नी ने कहा था,१ दर्ज़न केले लेते आना।
तभी उन्हें सड़क कनिारे बड़े और ताज़ा केले बेचते हुए एक बीमार सी दखिने वाली बुढ़यिा दखि गयी।

वैसे तो वह फल हमेशा राम आसरे फ्रूट भण्डार से ही लेते थे, पर आज उन्हें लगा कि क्यों न बुढ़यिा से ही खरीद लूँ ?
उन्होंने बुढ़यिा से पूछा, माई, केले कैसे दएि बुढ़यिा बोली, बाबूजी बीस रूपये दर्जन,
शर्माजी बोले, माई १५ रूपये दूंगा।
बुढ़यिा ने कहा, अट्ठारह रूपये दे देना, दो पैसे मै भी कमा लूंगी।
शर्मा जी बोले, १५ रूपये लेने हैं तो बोल, बुझे चेहरे से बुढ़यिा ने,न मे गर्दन हलिा दी।
शर्माजी बनिा कुछ कहे चल पड़े और राम आसरे फ्रूट भण्डार पर आकर केले का भाव पूछा तो वह बोला २४ रूपये दर्जन हैं बाबूजी, कतिने दर्जन दूँ ? शर्माजी बोले, ५ साल से फल तुमसे ही ले रहा हूँ, ठीक भाव लगाओ।
तो उसने सामने लगे बोर्ड की ओर इशारा कर दयिा।
बोर्ड पर लखिा था- मोल भाव करने वाले माफ़ करें
शर्माजी को उसका यह व्यवहार बहुत बुरा लगा, उन्होंने कुछ सोचकर स्कूटर को वापस ऑफसि की ओर मोड़ दयिा।
सोचते सोचते वह बुढ़यिा के पास पहुँच गए। बुढ़यिा ने उन्हें पहचान लयिा और बोली, बाबूजी केले दे दूँ, पर भाव १८ रूपये से कम नही लगाउंगी। शर्माजी ने मुस्कराकर कहा, माई एक नही दो दर्जन दे दो और भाव की चतिा मत करो। बुढ़यिा का चेहरा ख़ुशी से दमकने लगा। केले देते हुए बोली। बाबूजी मेरे पास थैली नही है ।
फरि बोली, एक टाइम था जब मेरा आदमी जन्दिा था तो मेरी भी छोटी सी दुकान थी। सब्ज़ी, फल सब बकिता था उस पर।
आदमी की बीमारी मे दुकान चली गयी, आदमी भी नही रहा। अब खाने के भी लाले पड़े हैं। कसिी तरह पेट पाल रही हूँ।
कोई औलाद भी नही है जसिकी ओर मदद के लएि देखूं। इतना कहते कहते बुढ़यिा रुआंसी हो गयी, और उसकी आंखों मे आंसू आ गए ।
शर्माजी ने ५० रूपये का नोट बुढ़यिा को दयिा तो वो बोली बाबूजी मेरे पास छुट्टे नही हैं।
शर्माजी बोले माई चतिा मत करो, रख लो, अब मै तुमसे ही फल खरीदूंगा, और कल मै तुम्हें ५०० रूपये दूंगा। धीरे धीरे चुका देना और परसों से बेचने के लएि मंडी से दूसरे फल भी ले आना। बुढ़यिा कुछ कह पाती उसके पहले ही शर्माजी घर की ओर रवाना हो गए।
घर पहुंचकर उन्होंने पत्नी से कहा, न जाने क्यों हम हमेशा मुश्कलि से पेट पालने वाले, थड़ी लगा कर सामान बेचने वालों से मोल भाव करते हैं कन्तिु बड़ी दुकानों पर मुंह मांगे पैसे दे आते हैं।
शायद हमारी मानसकिता ही बगिड़ गयी है। गुणवत्ता के स्थान पर हम चकाचौंध पर अधकि ध्यान देने लगे हैं।
अगले दनि शर्माजी ने बुढ़यिा को ५०० रूपये देते हुए कहा, माई लौटाने की चतिा मत करना। जो फल खरीदूंगा, उनकी कीमत से ही चुक जाएंगे। जब शर्माजी ने ऑफसि मे ये कस्सिा बताया तो सबने बुढ़यिा से ही फल खरीदना प्रारम्भ कर दयिा।
तीन महीने बाद ऑफसि के लोगों ने स्टाफ क्लब की ओर से बुढ़यिा को एक हाथ ठेला भेंट कर दयिा।

बुढ़यिा अब बहुत खुश है। उचति खान पान के कारण उसका स्वास्थ्य भी पहले से बहुत अच्छा है ।
हर दनि शर्माजी और ऑफसि के दूसरे लोगों को दुआ देती नही थकती।
शर्माजी के मन में भी अपनी बदली सोच और एक असहाय नर्बिल महलिा की सहायता करने की संतुष्टि का भाव रहता है..!

जीवन मे कसिी बेसहारा की मदद करके देखो यारों, अपनी पूरी जदिगी मे कयि गए सभी कार्यों से ज़्यादा संतोष मलिेगा...!!